Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college,ara

Notes forB.A part 3, paper 6

Topic:–क्लाईव के कार्यों का मूल्यांकन (An Estimate of the works of Clive)

रॉबर्ट क्लाईव की भारत में अँगरेजी सत्ता की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उसने दक्षिण भारत और बंगाल की तत्कालीन राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाई। उसी के प्रयासों से अँगरेज फ्रांसीसियों पर निर्णायक विजय प्राप्त कर सके, बंगाल में अगरेजी सत्ता की स्थापना हो सकी तथा कंपनी में व्याप्त अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार को कम किया जा सका। अनेक इतिहासकारों ने क्लाईव के कार्यों की प्रशंसा की है। पर्सिवल स्पीयर के अनुसार, "क्लाईव भारत में अँगरेजी साम्राज्य का निर्माता ही नहीं, अपितु भविष्य का अग्रदूत था।" उसका सही मूल्यांकन उसके कार्यों की समीक्षा कर ही किया जा सकता है।दक्षिण की राजनीति में क्लाईव की भूमिका- यद्यपि, 1744 ई० में क्लाईव कंपनी में एक किरानी के रूप में नियुक्त होकर भारत आया था, परंतु शीघ्र ही उसे अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिला। यह अवसर उसे कर्नाटक के दूसरे युद्ध के दौरान मिला। भारतीय राजनीति में क्लाईव का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब कर्नाटक के नवाब का पुत्र अपने पिता अनवरुद्दीन की हत्या के बाद भागकर अँगरेजों की शरण में पहुँचा। मुहम्मद अली को अँगरजों ने त्रिचनापली में शरण तो दे दी; परंतु इससे फ्रांसीसियों के क्रोध का कोपभाजन अँगरेजों को बनना पड़ा। फ्रांसीसियों की मदद से चंदा साहब ने त्रिचनापली का डेरा डाल दिया और बहुत संभावना थी कि अँगरेजों को आत्मसमर्पण कर देना पड़ता। ऐसी ही भयंकर परिस्थिति में क्लाईव आया। उसने दूरदर्शिता दिखाई। नवाब एवं फ्रांसीसियों का ध्यान बँटाने के लिए उसने आर्काट पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। इस खबर को सुनकर नवाब चंदा साहब ने त्रिचनापली से आधी सेना आर्काट पर कब्जा करने को भेज दी। इस मौके का लाभ उठाकर क्लाईव ने फ्रांसीसियों को त्रिचनापली का घेरा उठाने एवं आत्मसमर्पण करने को बाध्य कर दिया। अब मुहम्मद अली को कर्नाटक का नवाब बनाया गया, जिसपर अँगरेजों का प्रभाव था। इस तरह, कर्नाटक पर फ्रांसीसी प्रभुत्व को कायम करने में फ्रांसीसी क्लाईव की सैनिक कुशलता एवं कूटनीतिज्ञता के चलते असफल रहे।

बंगाल की राजनीति में क्लाईव - कर्नाटक के द्वितीय युद्ध के पश्चात क्लाईव वापस इंगलैंड लौट गया था; परंतु 1765 ई० में वह पुनः भारत आया। इस बार उसने और भी महत्त्वपूर्ण काम किए। 'काली-कोठरी' की दुर्घटना की खबर अब मद्रास पहुँची तो सेना के साथ वह कलकत्ता पहुँचा। उसने छल-कपट का सहारा लेकर कलकत्ता एवं हुगली पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात, सिराजुद्दौला को उसने अलीनगर की संधि

करने को बाध्य कर दिया। क्लाईव इतने से ही संतुष्ट नहीं हुआ। एक तरफ उसने चंद्रनगर पर अधिकार कर बंगाल में फ्रांसीसियों के हौसले को कुचल दिया, तो दूसरी तरफ षड्यंत्र कर बंगाल के नवाब को गद्दी से हटाकर उसकी जगह ऐसे नवाब को लाने का उपाय सोचा जो अँगरेजों का शुभचिंतक हो। इसी उद्देश्य से 1757 ई में प्लासी का युद्ध सिराजुद्दौला पर थोप दिया गया। इसके बाद मीरजाफर नवाब बना जो पूर्णतः क्लाईव के नियंत्रण में था और जिसने अँगरेजों को अत्यधिक सहूलियतें दीं। उसके इन कार्यों से प्रसन्न होकर कंपनी ने उसे बंगाल का गवर्नर बना दिया,जिसपर पद पर वह 1757-60 तक रहा।

क्लाईव की दूसरी गवर्नरी- 1765 ई० में क्लाईव दूसरी बार गवर्नर होकर भारत पहुँचा। इस समय तक अँगरेज बक्सर का प्रसिद्ध युद्ध जीत चुके थे। परंतु, बंगाल एवं कंपनी की आंतरिक स्थिति बहुत ही बुरी थी। पराजित शक्तियों के विषय में भी नीति-निर्धारण का काम शेष था। अतः, क्लाईव ने इन समस्याओं की तरफ ध्यान दिया। उसने अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट शाहआलम के साथ इलाहाबाद की संधि कर ली। इस संधि द्वारा अवध के नवाब और मुगल सम्राट पर भी कंपनी का प्रत्यक्ष नियंत्रण कायम हो गया। सबसे बड़ी बात जो हुई वह थी कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी का प्राप्त होना। अब ईस्ट इंडिया कंपनी सही मायने में व्यापारी से शासक बन चुकी थी। प्रशासनिक क्षेत्र में क्लाईव ने महत्त्वपूर्ण सुधार किए। उसका सबसे बड़ा काम था बंगाल में द्वैध शासन की स्थापना जो वारेन हेस्टिंग्स के आगमन के समय तक चलती रही। उसने कंपनी के कर्मचारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अनुशासनहीनता को भी रोकने का प्रयास किया तथा आवश्यक सैनिक सुधार किए।क्लाईव के कार्यों की समीक्षा-क्लाईव 1767 ई" में इंगलैंड वापस लौट गया। उसके विरोधियों ने ईर्ष्यावश उसपर घूस, भ्रष्टाचार आदि का अभियोग लगाया, लेकिन ब्रिटिश संसद ने उसके कार्यों की प्रशंसा की और उसे उन आरोपों से बरी कर दिया। वास्तव में भारत में अँगरेजी सत्ता की स्थापना का श्रेय लॉर्ड क्लाईव को ही दिया जा सकता है। यद्यपि, उसके चरित्र में अनेक दुर्बलताएँ थीं-वह लालची विश्वासघाती, प्रपंची और चतुर था, परंतु वह कुशल सेनापति एवं कूटनीतिज्ञ भी था। यद्यपि, उसके कार्यों से बंगाल की अवस्था बिगड़ गई; परंतु इससे कंपनी और अँगरेज जाति का हित ही हुआ। मेकॉले ने लॉर्ड क्लाईव का सही मूल्यांकन इन शब्दों में किया है, "..... प्रत्येक व्यक्ति जो उसके समस्त जीवन पर न्यायसंगत तथा पक्षपातरहित दृष्टि डालेगा, उसे स्वीकार करना होगा कि हमारे द्वीप जिसने बहुत से वीरों को जन्म दिया है-ने विरले ही इतने महान व्यक्ति को, जो शस्त्रों तथा सूझबूझ से अलंकृत हो, जन्म दिया है। भारत में क्लाईव के कार्यों का इससे अच्छा मूल्यांकन दूसरा कोई अँगरेज नहीं कर सकता, लेकिन भारतीयों की सहानुभूति वह नहीं प्राप्त कर सकता, क्योंकि भारत में अगरेजी सत्ता की स्थापना उसने छल-प्रपंच एवं षड्यंत्रों का सहारा लेकर की।